सुबह एवं शाम के अज़कार

(الم), अलिफ़-लाम्-मीम्।
(ذَلِكَ الْكِتَابُ لا رَيْبَ فِيهِ هُدىً لِلْمُتَّقِينَ), ज़ालिकल्-किताबु ला रै-बा फ़ीहि हुदल्लिल्-मुत्तक़ीन, (यह ऐसी पुस्तक है, जिसमें कोई संशय तथा संदेह नहीं है। यह उन्हें सीधी डगर दिखाने के लिए है, जो (अल्लाह से) डरते हैं)। (الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ), अल्लज़ीना युअमिनूना बिल-ग़ैबि व युक़ीमून-स्सलाता व मिम्मा रज़क़नाहुम् युन्फ़िक़ूना, (जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं और हमने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उसमें से दान करते हैं)। (وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ), वल्लज़ीना युअमिनूना बिमा उन्ज़िला इलैका व मा उन्ज़िला मिन् क़ब्लिका व बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून), (तथा (हे नबी!) जो आप पर उतारी गयी (क़ुरआन) तथा आपसे पूर्व उतारी गयी (पुस्तकों) पर ईमान रखते हैं तथा आख़िरत (परलोक) पर भी विश्वास रखते हैं)। (أُولَئِكَ عَلَى هُدىً مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ), उलाइका अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइका हुमुल्-मुफ़लिहून),(वही लोग, अपने रब की बताई गई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे)।" [सूरा अल-बक़रा : 1-5]
اللَّهُ لا إِلَهَ إِلا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ وَلا يَؤُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ), अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल-हय्युल क़य्यूमु, ला तअख़ुज़ुहू सिनतुंव व ला नौम, लहू मा फ़िस समावाति व मा फ़िल-अर्ज़, मन ज़ल्लज़ी यशफ़उ इंदहू इल्ला बि- इज़्निही, यअलमु मा बैना ऐदीहिम वमा ख़ल्फ़हुम, व ला युहीतूना बि शैईम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाआ, वसिआ कुर्सिय्युहुस् समावाति वल-अर्ज़ि वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा, व हुवल अलिय्युल अज़ीम, (अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है। उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, वह सब जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है)।"
[आयत अल-कुर्सी, सूरा अल-बक़रा : 255]
آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ), आमनर्रसूलु बिमा उन्ज़िला इलैहि मिर्रब्बिहि वलमूमिनूना, कुल्लुन आमना बिल्लाहि व मलाइकतिहि व कुतुबिहि व रुसुलिहि, ला नुफ़र्रिक़ु बैना अहदिम मिर्ररुसुलिहि, व क़ालू समिअना व अतअना ग़ुफ़्रानका रब्बना व इलैकल् मसीर, (रसूल उस चीज़ पर ईमान लाए, जो उनकी तरफ़ उनके रब की ओर से उतारी गई तथा सब ईमान वाले भी। हर एक अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी पुस्तकों और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (वे कहते हैं) हम उसके रसूलों में से किसी एक के बीच अंतर नहीं करते। और उन्होंने कहा हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया। हम तेरी क्षमा चाहते हैं ऐ हमारे रब ! और तेरी ही ओर लौटकर जाना है)।
لا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْساً إِلا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْراً كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلا تُحَمِّلْنَا مَا لا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ), ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अहा, लहा मा कसबत व अलैहा मक्,तसबत, रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन नसीना औ अख़्तअ्ना , रब्बना वला तहमिल अलैना इस़रन कमा हमलतहू अलल्लज़ीना मिन क़ब्लिना, व ला तुहम्मिलना मा ला ताक़त लना बिही, वअ्फ़ु अन्ना, वग़्फ़िर लना वर्हम्ना, अन्ता मौलाना फ़न्सुरना अलल क़ौमिल काफ़िरीन, (अल्लाह किसी प्राणी पर भार नहीं डालता परंतु उसकी क्षमता के अनुसार। उसी के लिए है जो उसने (नेकी) कमाई और उसी पर है जो उसने (पाप) कमाया। ऐ हमारे रब ! हमारी पकड़ न कर यदि हम भूल जाएँ या हमसे चूक हो जाए। ऐ हमारे रब ! और हमपर कोई भारी बोझ न डाल, जैसे तूने उसे उन लोगों पर डाला जो हमसे पहले थे। ऐ हमारे रब ! और हमसे वह चीज़ न उठवा जिस (के उठाने) की हममें शक्ति न हो। तथा हमें माफ़ कर और हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर। तू ही हमारा स्वामी (संरक्षक) है, इसलिए काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर)।" [सूरा अल-बक़रा : 285-286]
(हा मीम्)।
(تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ), तन्ज़ीलुल किताबि मिनल्लाहिल अज़ीज़िल अलीम, (इस पुस्तक का अवतरण अति प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाले अल्लाह की ओर से है)। (غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ), ग़ाफ़िरिज़्ज़ंबि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल इक़ाबि ज़ित्तौलि, ला इलाहा इल्ला हुवा इलैहिल मसीरु, (जो पाप क्षमा करने वाला और तौबा स्वीकार करने वाला, कठोर दंड देने वाला, बड़ा अनुग्रहशील है। उसके सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। उसी की ओर (सबको) जाना है)।" [सूरा ग़ाफ़िर : 1-3]
(هُوَ اللَّهُ الَّذِي لا إِلَهَ إِلا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ) , हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवा आलिमुल ग़ैबि वश्शहादति हुवर्रहमानुर्रहीम, (वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, हर परोक्ष तथा प्रत्यक्ष को जानने वाला है, वह बेहत कृपाशील, अत्यंत दयालु है)।
(هُوَ اللَّهُ الَّذِي لا إِلَهَ إِلا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ), हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवल -मलिकुल क़ुद्दूसुस सालामुल-मुअमिनुल-मुहैमिनुल अज़ीज़ुल जब्बारुल मुतकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून, (वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह बादशाह है, अत्यंत पवित्र, हर दोष से मुक्त, पुष्टि करने वाला, निगरानी करने वाला, प्रभुत्वशाली, शक्तिशाली, बहुत बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उससे, जो वे (उसका) साझी बनाते हैं)। (هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمِ), हुवल्लाहुल ख़ालिकुल बारिऊल-मुसव्विरु लहुल अस्माउल हुस्ना, युसब्बिहु लहू माफ़िस्समावाति वल-अर्ज़ि, व हुवल अज़ीज़ुल हकीम, (वह अल्लाह ही है, जो रचयिता, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूप देने वाला है। सब अच्छे नाम उसी के हैं। उसकी पवित्रता का गान हर वह चीज़ करती है जो आकाशों तथा धरती में है और वह प्रभुत्वशाली, हिकमत वाला है)।" [सूरा अल-हश्र : 22-24]
(قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ), कुल हुवल्लाहु अहद, ((ऐ रसूल!) आप कह दीजिए : वह अल्लाह एक है)।"

(قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ), क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़, ((ऐ नबी!) कह दीजिए : मैं सुबह के रब की शरण लेता हूँ)।" (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ), क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास, ((ऐ नबी!) कह दीजिए : मैं शरण लेता हूँ लोगों के रब की)।" तीनों सूरतें तीन बार पूरी पढ़ी जाएँ (जोकि इस प्रकार हैं: क़ुल हुवल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद। लम यलिद व लम यूलद। व लम यकुल लहु कुफ़ुवन अहद।क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़। मिन शरि मा ख़लक़। व मिन शरि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब। व मिन शरिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़द। व मिन शरि हासिदन इज़ा हसद।क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नास। मलिकिन्नास। इलाहिन्नास। मिन शरिल वसवासिल ख़न्नास। अल्लज़ी युवसविसु फ़ी सुदूरिन्नास। मिनल जिन्नति वन्नास।)

"أعوذ بكلمات الله التامات من شر ما خلق", अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहित् ताम्माति मिन शरि मा ख़लक़, (मैं अल्लाह की पैदा की हुई वस्तुओं के दुष्कृत्य से, उसके पूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ)।"

(तीन बार।)

"بسم الله الذي لا يضر مع اسمه شيء في الأرض ولا في السماء وهو السميع العليم", बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुरु मअस्मिहि शैउन फ़िल अर्ज़ि वला फ़िस्समाई व हुवस समीउल अलीम, (शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जिसके नाम के साथ धरती और आकाश में कोई वस्तु हानि नहीं पहुँचा सकती तथा वह सब सुनने वाला और सब जानने वाला है)।"

(तीन बार।)

"رضيت بالله ربًّا وبالإسلام دينًا وبمحمد صلى الله عليه وسلم نبيًّا", रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन व बिलइस्लामि दीनन व बिमुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबिय्यन, (मैं अल्लाह को रब , इस्लाम को धर्म और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी के रूप में मानकर संतुष्ट हो गया)।"

(तीन बार।)

"أصبحنا وأصبح الملك لله والحمد لله لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير، رب أسألك خير ما في هذا اليوم وخير ما بعده، وأعوذ بك من شر ما في هذا اليوم ومن شر ما بعده، ربِّ أعوذ بك من الكسل والهرم وسوء الكِبَر، وأعوذ بك من عذاب النار وعذاب القبر", अस्बहना व अस्बहल्मुल्कु लिल्लाहि, वल्हम्दुलिल्लाहि, ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर्, रब्बि अस्अलुका ख़ैरा मा फ़ी हाज़ल यौमि व ख़ैरा मा बअदहू, व अऊज़ुबिका मिन शरि मा फ़ी हाज़ल यौमि व मिन शरि मा बअदहू, रब्बि अऊज़ुबिका मिनल कसलि वल हरमि व सूइल किबरि, व अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिन् नारि व अज़ाबिल क़ब्रि, (हमने तथा अल्लाह के राज्य ने सुबह की, सारी प्रशंसा अल्लाह की है, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, सारा राज्य उसी का है और सब प्रशंसा उसी की है और वह हर बात की क्षमता रखता है। ऐ मेरे रब ! मैं तुझसे इस दिन की तथा इसके बाद की भलाइयाँ माँगता हूँ। इसी तरह इस दिन की तथा इसके बाद की बुराइयों से तेरी शरण में आता हूँ। ऐ मेरे रब ! मैं तेरी शरण में आता हूँ सुस्ती, अति व्योवृद्ध होने तथा बुढ़ापे की बुराई से। ऐ मेरे रब ! मैं तेरी शरण माँगता हूँ आग की यातना और क़ब्र के अज़ाब से)।

जबकि शाम के समय इस ज़िक्र को इस तरह पढ़े : "أمسينا وأمسى الملك لله, अम्सैना व अम्सल्मुल्कु लिल्लाहि..., (हमने और अल्लाह के राज्य ने शाम की..)" आगे कहे : "رب أسألك خير ما في هذه الليلة, रब्बि अस्अलुका ख़ैरा मा फ़ी हाज़िहिल्लैलति, (ऐ मेरे रब ! मैं तुझसे इस रात की तथा इसके बाद की भलाइयाँ माँगता हूँ..)" अंत तक, अर्थात "أصبحنا وأصبح الملك لله" के स्थान पर "أمسينا وأمسى الملك لله" कहे और "رب أسألك خير ما في هذه الليلة" के स्थान पर "رب أسألك خير ما في هذا اليوم" कहे। शेष ज़िक्र उसी तरह पढ़े।

"اللهم بك أصبحنا وبك أمسينا وبك نحيا وبك نموت واليك النشور", अल्लाहुम्मा बिका अस्बहना व बिका अम्सैना, व बिका नह्या व बिका नमूतु, व इलैकन्नुशूर्, (ऐ अल्लाह! हमने तेरी ही नेमत से सुबह की और तेरी ही नेमत से शाम की, हम तेरी ही शरण में जीते हैं और तेरी ही शरण में मरते हैं और क़यामत के दिन तेरी ही ओर जीवित होकर जाना है)।

शाम के समय यह अज़कार पढ़े : "اللهم بك أمسينا وبك أصبحنا وبك نموت وبك نحيا وإليك المصير", अल्लाहुम्मा बिका अम्सैना व बिका अस्बहना, व बिका नमूतु व बिका नह्या, व इलैकल् मसीर, (ऐ अल्लाह! हमने तेरी ही नेमत से शाम की और तेरी ही नेमत से सुबह की, हम तेरी ही शरण में मरते हैं और तेरी ही शरण में जीते हैं और तेरी ही ओर जाना है)।

"اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ", अल्लाहुम्मा मा अस्बहा बी मिन् नेमतिन औ बिअहदिन् मिन ख़ल्क़िका फ़मिन्का वह्दका ला शरीका लका, फ़लकल् हम्दु व लकश्शुक्रु, (ऐ अल्लाह! सुबह के समय मेरे तथा तेरी हर सृष्टि के साथ जो भी नेमत है, वह केवल तेरी ओर से ही है और उसमें तेरा कोई साझी नहीं है। अतः तेरी ही प्रशंसा है और तेरा ही शुक्र है)।

इस ज़िक्र को शाम के समय पढ़ना हो, तो इस तरह कहे : "اللهم ما أمسى بي...,अल्लाहुम्मा मा अम्सा बी...., ऐ अल्लाह! शाम के समय मेरे तथा तेरी हर सृष्टि के साथ जो भी नेमत है..

"اللَّهمَّ إني أصبَحتُ في نعمةٍ وعافيةٍ وسِترٍ ، فأتِمَّ علَيَّ نِعمَتَكَ وعافيتَكَ وسِترَكَ في الدُّنيا والآخرةِ" , अल्लाहुम्मा इन्नी अस्बहतु फ़ी नेमतिन व आफ़ियतिन व सित्,रिन, फ़,अतिम्मा अलय्या नेमतका व आफ़ियतिका व सित,रका फ़िद्दुनिया वल आख़िरह, (ऐ अल्लाह! मैंने नेमत, सुरक्षा एवं पर्दे के साथ सुबह की। अतः मेरे ऊपर अपनी नेमत, मुझे प्रदान की गई सुरक्षा एवं मुझपर डाले गए पर्दे को दुनिया एवं आख़िरत में संपूर्ण रख)।

(तीन बार।) इस ज़िक्र को शाम के समय पढ़ना हो, तो इस तरह पढ़े : "اللهم إني أمسيت.., अल्लाहुम्मा इन्नी अम्सैतु..., (ऐ अल्लाह! मैंने नेमत, सुरक्षा एवं पर्दे के साथ शाम की)। शेष दुआ उसी तरह पढ़े।

"اللهم إني أعوذ بك من الهم والحزن، وأعوذ بك من العجز والكسل، وأعوذ بك من الجبن والبخل، وأعوذ بك من غلبة الدَيْنِ ومن قهْر الرجال", अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल हम्मि वल हुज़नि, व अऊज़ु बिका मिनल अज्ज़ि वल कसलि, व अऊज़ु बिका मिनल जुब्नि वल बुख़्लि, व अऊज़ु बिका मिन ग़लबतिद् दैनि व मिन क़ह्,रिर् रिजालि, (ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ चिंता तथा दुःख से, मैं तेरी शरण माँगता हूँ विवशता तथा सुस्ती से, मैं तेरी शरण माँगता हूँ कायरता तथा कंजूसी से, मैं तेरी शरण माँगता हूँ क़र्ज़ के बोझ तथा लोगों के प्रभुत्व से)।

"اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اللهم إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ والْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللهم احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يديَّ وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي، وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِك أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي", अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल

आफ़ियता फ़िद्दुनिया वल आख़िरति, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल् अफ़्वा वल आफ़ियता फ़ी दीनी व दुनियाया व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्तुर औराती, व आमिन रौआती, अल्लाहुम्मा इह्फ़िज़्नी मिन् बैनि यदय्या व मिन ख़ल्फ़ी, व अन् यमीनी, व अन् शिमाली, व मिन फ़ौक़ी, व अऊज़ु बि अज़मतिका अन् उग़्ताला मिन् तह्ती, (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया एवं आख़िरत में क्षमा एवं सुरक्षा माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपने धर्म, अपने संसार, अपने परिवार और अपने धन के संबंध में क्षमा एवं सुरक्षा माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे दोषों को छुपा दे और मुझे भय से सुरक्षा प्रदान कर। ऐ अल्लाह! तू मेरी, मेरे आगे, मेरे पीछे, मेरे दाएँ, मेरे बाएँ और मेरे ऊपर से रक्षा कर। साथ ही मैं इस बात से तेरी महानता की शरण में आता हूँ कि मुझे नीचे से धर दबोचा जाए)।

"اللهم أنت ربي لا إله إلا أنت، خلقتني وأنا عبدك وأنا على عهدك ووعدك ما استطعت، أعوذ بك من شر ما صنعت، أبوء لك بنعمتك عليّ، وأبوء بذنبي، فاغفر لي فإنه لا يغفر الذنوب إلا أنت", अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता खलक़तनी व अना अब्दुका, व अना अला अहदिका व वअ्दिका मस्त,तअतु अऊज़ु बिका मिन शर्रि-मा सनअतु अबूऊ लका बि निअमतिका अलैया व अबूऊ बि ज़न्बी फग़्फ़िर ली फ़इन्नहु ला यग़्फ़िरुज़-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता, (ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। तूने ही मेरी रचना की है और मैं तेरा बंदा हूँ। मैं तुझसे की हुई प्रतिज्ञा एवं वादे को हर संभव पूरा करने का प्रयत्न करूँगा। मैं अपने हर उस कुकृत्य से तेरी शरण में आता हूँ, जो मैंने किया है। मैं तेरी ओर से दी जाने वाली नेमतों (अनुग्रहों) का तथा अपनी ओर से किए जाने वाले पापों का इक़रार करता हूँ। तू मुझे क्षमा कर दे, क्योंकि तेरे सिवा पापों को क्षमा करने वाला कोई नहीं है)।

"اللهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أشْهَدُ أنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا، أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ", अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि, आलिमल ग़ैबि वश्शहादति, रब्बा कुल्लि शैइन व मलीकहु, अश्हद अल् ला इलाहा इल्ला अन्ता, अऊज़ु बिका मिन् शर्रि नफ़्सी, व मिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किही, व अन् अक़तरिफ़ा अला नफ़्सी सूअन, औ अजुर्रहु इला मुस्लिमिन, (ऐ अल्लाह, आकाशों तथा धरती के रचयिता, छिपी तथा खुली बातों के जानने वाले, हर चीज़ के रब और प्रभु! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, मैं तेरी शरण में आता हूँ अपने प्राण की बुराई से, शैतान की बुराई और उसके शिर्क से तथा इस बात से कि मैं अपने साथ या किसी मुसलमान के साथ कोई बुरा व्यवहार करूँ)।"

"اللهم إني أصبحت أُشهدُك وأشهد حملة عرشك وملائكتك وأنبياءك وجميع خلقك بأنك أنت الله لا إله إلا أنت وأن محمدًا عبدك ورسولك ", अल्लाहुम्मा इन्नी अस्बहतु, उश्हिदुका व उश्हिदु हमलता अर्शिका व मलाइकतिका व अंबियाइका व जमीआ ख़ल्क़िका बिअन्नका अन्तल्लाहु, ला इलाहा इल्ला अन्ता, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुका व रसूलुका, (ऐ अल्लाह! मैंने सुबह की। मैं तुझे, तेरा अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को, तेरे अन्य फ़रिश्तों को तथा तेरी सारी सृष्टि को गवाह बनाता हूँ कि तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तेरे बंदे और रसूल हैं)।"

शाम को यह ज़िक्र पढ़ना हो, तो इस तरह कहे : "اللهم إني أمسيت..., अल्लाहुम्मा इन्नी अम्सैतु..., (ऐ अल्लाह! मैंने शाम की...)" शेष दुआ उसी तरह पढ़े। (चार बार।)

"لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير", ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीका लहु, लहुल्मुल्कु, व लहुल्महम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, (अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह प्रत्येक चीज़ का सामर्थ्य रखता है)।"

(सौ बार।) सुबह या शाम को।

"حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمُ", हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कल्तु व हुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम्, (मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, मेरा उसी पर भरोसा है और वह महान सिंहासन का स्वामी है)।"

(सात बार।)

"حَسْبِيَ اللَّهُ وَكَفَى، سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ دَعَا، لَيْسَ وَرَاءَ اللَّهِ مَرْمَى", हस्बियल्लाहु व कफ़ा, समिअल्लाहु लिमन दआ, लैसा वराअल्लाहि मर्मा, (मेरे लिए अल्लाह पर्याप्त तथा काफ़ी है। अल्लाह ने उसकी सुन ली, जिसने उसे पुकारा। अल्लाह से इतर कोई उद्देश्य नहीं है)।

سبحان الله وبحمده, सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, (अल्लाह पवित्र है अपनी प्रशंसा के साथ)।

(सौ बार।) सुबह अथवा शाम को या फिर दोनों समय।

أستغفر الله وأتوب إليه, अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतूबु इलैहि, (मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ और उसी की ओर लौटता हूँ)।

(सौ बार।)

ये कुछ अज़कार हैं, जिनको मैंने लिखा है। दुआ है कि अल्लाह इन्हें लाभकारी बनाए।

इन शब्दों को मुहम्मद सालेह अल-उसैमीन ने 20/1/1418 हिजरी को लिखा है।